Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 012 Issue 06 JUNE 2026 Pages 16 A.S. Rs 100

सत्संग समाचार

✻ शनिवार, दि. ६ जून गुरुहरि काकाजी महाराज के १०८वें प्रागट्यपर्व पर ‘अक्षरधाम’, स्वामिनारायण मंदिर, पवई में विशिष्ट समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। इस महापूजा में प.पू. वशीभाई के MESO कंपनी के Director श्री. केतनभाई शाह और परिवार, CA श्री. काबराजी, CA प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी, CA दिपकभाई अग्रवालजी, CA कु. नीता दोशीजी और उनके भाई श्री. मुकुलभाई, CA श्रीमती प्रतिमाजी और ऐसे कई महानुभावों तथा हरिभक्तोंने इस भव्य महापूजा का लाभ लिया।

सभीके लिये यह बहुत ही अविस्मरणीय और आध्यात्मिक दिव्य अनुभूतिवाला अवसर था। धुन, भजन और आशीर्वाद के इस माहौल से समग्र वातावरण दिव्यता से सभर हो गया था। इस महापूजा का बहुत

Special Samuh Mahapooja at "Akshardham" Temple, Powai

सुंदर आयोजन देखकर सभीको सकारात्मक और आध्यात्मिक ऊर्जा तथा भक्ति का अनुभव हुआ। समाज के जानेमाने और कई क्षेत्रो में प्रतिष्ठित महानुभावों की उपस्थिति से सभीको प्रभु तथा संतों के प्रति कृतकृत्यता एवं शांति की अनुभूति हुई। सभीने अंत में भरतभाई, वशीभाई और अन्य संतभाईयों, संतबहनों का अभिवादन करके आभार व्यक्त किया।

शाम को सभी संतभाईयों, संतबहनें, मुंबई, महाराष्ट्र, गुजरात के कई हरिभक्तों तथा गुणातीत ज्योत की पू. चारुबहन और संतबहनों की उपस्थिति में 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई में आनंदोत्सव के साथ काकाजी का प्रागट्यदिन मनाया गया।

इस महोत्सव का विषय पेरिस में होनेवाले 'गुरुस्मृति भक्ति महोत्सव' पर आधारित और गुरुहरि काकाजी महाराज के १०८वे प्रागट्यपर्व निमित्त रखा गया था।

Guruhari Kakaji Maharaj 108th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

पू. माधुरीबहन ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज प्रगट ही है। उनकी साथ जो प्रसंग हुए उसकी सहज ही स्मृति आज हो रही है। काकाजी शिबिर बहुत कराते थे। तब से ही उन्होंने धुन कराने की आदत लगा दी थी। आज जो प्रगट स्वरुपों मिले है वो हमें वैसी ही तालीम देते है। भरतभाई, वशीभाई काकाजी के कार्य को आगे बढा रहे है। काकाजी-कांतिकाकाने जैसी मैत्री की वैसी हमें हमारे साथ रहनेवाले के साथ करनी है। तो हे काकाजी! हम आप राजी हो ऐसी भक्ति हम करते रहे करें वही प्रार्थना।

हरिधाम से जुडे **प.भ. मणीभाई हरिया ने** कहा कि रमेशभाई सोनी बचपन के मेरे दोस्त थे। इसलिये गुरुहरि काकाजी महाराज का सहज सानिध्य हो जाता था। चंदुभाई माणेक, जयंतीभाई सोनी ऐसे हम सभी तारदेव मंदिर में बार-बार मिलते थे। काकाजी हमें क्या करना है और कैसे करना

है उसकी मास्टर चाबी देते थे। काकाजी हमारे साथ हमारे जैसे होकर रहे। जब प्रसंग बनते है तब हम समझ ही नहीं पाते कि बडे पुरुष हमें क्या कहना चाहते है। आज जो प्रगट स्वरुप मिले है हमें उनकी अनुवृत्ति को समझना है। स्वामीजीने दो ग्रंथ लिखे है – सरस एक सहजानंद और सहृदयी। तो सहृदयी पुस्तक हम जरुर से पढे। उसमें काकाजी के बहुत अद्‌भुत प्रसंग लिखे है। तो ऐसे गुणातीत संतों की सच्ची पहचान हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज काकाजी के माला के मणका में हम आ जाये ऐसा संकल्प करना है। काकाजी कहते थे कि हम सब एक ही है, काका-पप्पा-स्वामी हम तीनों एक ही है। Problem में भी Perform करना वो काकाजीनें हमें सीखाया है। वे दूरंदेशी स्वरुप थे। हम जिसको मानते है उसमें रंचमात्र भी संशय नहीं करना चाहिए। अब जिम्मेदारी लेने का समय आ गया है। अगर संशय होता है तो गुरु को पूछो और वे बोले ऐसा करो। किसी भी बात का चर्चा करने से ज्यादा उसका हल निकालो। हम Problem को पकडके रखते है। काकाजी हमेशा कहते थे कि Each day is supreme, do your utmost superbly. हररोज प्रसंग बनते ही है। हमें केवल प्रभु का सहारा लेने की आदत डालनी चाहिए। तो हे काकाजी! हम गुणातीतभावनावाले साधु बन पाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज का एक ही भाव था आनंद करो। कौन मिला है? उसकी मस्ती में हमें रहना है। काकाजी के आशीष के आगे सबकुछ फिका है। अहो! गाथा गुणातीत विभुनी... उस ग्रंथ में काकाजीने हमें हमेशा दिया है ऐसी एक प्रार्थना लिखी है, वह पढेंगे और सोचेंगे तो पता चलेगा कि हम कितने नसीबदार है। काकाजीने केवल सभीको दिया ही है। कभी भी कुछ भी देने में कोई कमी नहीं रखी है। हमें हमारे Comfort zone से बाहर निकलना है। हमें सारी सुविधाएँ अच्छी चाहिए। हम काकाजी के साथ तारदेव मंदिर रहते थे, तब वे हमारे साथ

Guruhari Kakaji Maharaj 108th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

Guruhari Kakaji Maharaj 108th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

Adjust हो जाते थे। हम Problem की चर्चा करते रहते है, उसका हल ढूँढना चाहिए। हमें केवल प्रयत्न करना है। बाकी सब काम भगवान करने ही वाले है। काकाजी कहते थे कि कोई भी काम गुणातीत स्वरुपों को याद करके करोगे तो वो जरुर सफल होगा। उसके बाद काकाजी का लिखा सन् १९५१ का पत्रसंजीवनी का पत्र उन्होंने पढा।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि महाराज के समय स्वरुपानंदस्वामी एक बहुत शक्तिशाली और मूर्ति के अखंड दर्शन करनेवाले संत थे। वो चेतना डॉ. नाथाभाई में आई और उनका संबंध शास्त्रीजी महाराज से हुआ। उनके आशीर्वाद से डॉ. नाथाभाई के घर बाबुभाई और दादुभाई यानि पप्पाजी-काकाजी का प्रागट्य हुआ। पप्पाजी का जन्म बोरसद में और काकाजी का नडियाद में हुआ था। तो आज काकाजी के प्रागट्यदिन पर हम संकल्प करें कि साल में एकबार तो नडियाद मंदिर के दर्शन करने अवश्य जाये। काकाजी को मैत्रीभाव बहुत पसंद था। तो हमें अंदरोअंदर सभीके साथ मैत्री बढानी है। हमें सभीके साथ परिवार की तरह रहना चाहिए। तो आध्यात्मिक प्रगति सहज बढेगी। वैसा कुटुंबभाव का दर्शन हमें दिल्ली मंडल में सहज होता है। काकाजी कहते थे कि कुछ मिनट के लिये अपना नाम भूल जाओ और खुद को ब्रह्मरुप मानो। तो ऐसे काकाजी के मर्जी के मुताबिक हम जी सके वही प्रार्थना।

गुरुहरि काकाजी महाराज के Audio द्वारा आशीर्वाद प्राप्त हुए।

उसके बाद संतबहनों द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज के १०८वे प्रागट्यदिन निमित्त १०८ माला का सुंदर हार संतभाईयोंने काकाजी की मूर्ति को पहनाया। साथ ही इस उपलक्ष्य में सभी संतभाईयोंने भरतभाई और वशीभाई को भी हार पहनाया।

इसी प्रकार गुणातीत समाज के अन्य सभी केन्द्रो में भी गुरुहरि काकाजी महाराज का प्रागट्यपर्व भक्तिभाव और आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

In Sydney

In London

✻ रविवार, दि. ७ जून की विशिष्ट भजन संध्या गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रागट्यपर्व के निमित्त घाटकोपर के झवेरबेन पोपटलाल सभागृह हॉल में हुई।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज कई छोटे बच्चोंने सुंदर भजन प्रस्तुत कर गुरुहरि काकाजी की मूर्ति में डूबों दिया। काकाजी के जीवन से बहुत कुछ सीखने मिलता है। उनका एक शब्द ही काफी है। आज हमें तीन बात यहाँ से लेकर जानी है। **(१)** देने की वृत्ति रखो - सामनेवाले को राजी करना वही काकाजीने खुद जीकर हमें सीखाया है। कोई कुछ मांगे तो दे दो। ये भाव रखेंगे तो हमको फायदा ही होगा। साक्षात्कार काकाजी को हुआ लेकिन उसका सुख आज हमें मिल रहा है। **(२)** धुन - पूरे सत्संग समाज में Force से धुन केवल काकाजी ही कर सकते थे। २ घंटे के बाद भी उस धुन की गति उतनी तेज होती थी। हरपल केवल धुन का सहारा लेना वो उन्होंने हमें सीखाया। 'मेरे साथ भजन में बैठो' बस इतनी ही आज्ञा करते थे। वैसे धुन करने की आदत डलवाते थे। महिमा से और संत की स्मृति के साथ धुन करेंगे तो जरुर पहुँचेगी। **(३)** प्रायश्चितरुप प्रार्थना - कोई भी तकलीफ या मूंझवण आती

Bhajan Sandhya at Ghatkopar

है तो रात को प्रायश्चितरुप प्रार्थना करो। दिल से Intense aspiration के साथ प्रार्थना करेंगे, धुन करेंगे तो जो भी मूंझवण है वह टल जायेगी और उसकी अनुभूति भी होगी। तो ये तीन बात दृढ करें और हमेशा आनंद में रहे वही प्रार्थना।

विशिष्ट महानुभाव में प.भ. मगनभाई का संतभाईयोंने खेस और स्मृतिभेट देकर अभिवादन किया।

With P.P. Premswaroopswamiji at Germany

✻ सोमवार, दि. ८ जून को प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी अपनी विदेश धर्मयात्रा दौरान Germany पधारे थे। वहाँ गये हुए प.भ.डॉ. दिपकभाई परमार और उनके पुत्र प.भ. प्रणवभाईने पवई मंदिर की ओर से उनको विशिष्ट स्मृतिभेट अर्पण की। पढाई के लिये Germany गये हुए प.भ. नीलभाई मुनशी भी प्रेमस्वरुपस्वामीजी के दर्शन और सेवा लाभ लिया।

✻ गुरुवार, दि. ११ और शुक्रवार, १२ जून को प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, प.भ. हेमंतभाई मर्चन्ट और प.भ.डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्ट २०२७ में प.पू. गुरुजी के ९०वें प्रागत्यदिन के उपलक्ष्य में अनमोल स्मृति महोत्सव निमित्त प.पू. गुरुजी के जीवन की कई स्मृतियाँ सभी से बाँटने दिल्ली गये थे। साथ ही गुरुजी, संतों और हरिभक्तों के साथ मिलकर आनंद किया।

With P.P. Guruji at Delhi

✻ मंगलवार, दि. १६ जून को अनुपम मिशन, मोगरी की प.भ. उमीबहन, प.भ. ज्योतिबहन पोपट, प.भ. सुवर्णाबहन 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। संतभाईयों को मिलकर मंदिर के नूतनीकरण की जानकारी प्राप्त करके धुन की और आनंद किया।

Anoopam Mission devotees at "Akshardham" Temple, Powai

उसी प्रकार से दि. २३ जून को अनुपम मिशन, मोगरी से प.भ. हेतनभाई और प.भ. राजेशभाई लंडन में दि. १५ से दि. १९ दौरान होनेवाले 'गुरुमंत्र दीक्षा हीरक महोत्सव' एवं AUM crematorium के लोकार्पण

निमित्त खास आमंत्रण देने 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। सभी संतभाईयोंने उनका प्रेम से अभिवादन किया।

✻ शुक्रवार, दि. १९ जून को शिकागो DesPlaines मंदिर में शुक्रवार की सभा में गुणातीत ज्योत से डॉ.पू. वीणाबहन और संतबहनें पधारे थे। वे सभी हरिभक्तों से मिले और प.पू. दिनकरभाई के साथ सत्संग का लाभ भी लिया और आनंद किया।

P.Dr. Veenaben and Saint Sisters (Gunatit Jyot) at DesPlaines Temple, Chicago

✻ शनिवार, दि. २० जून को १२वे आंतरराष्ट्रीय योग दिन का कार्यक्रम 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई में सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा हरिभक्तों प.भ.डॉ. दीपकभाई परमार तथा उनके द्वारा तैयार किये गये अन्य योग शिक्षक, कोर्पोरेटर श्री. चंदन शर्माजी, जलाजा फाउन्डेशन के ट्रस्टी श्री. जे.पी. शेट्टीजी, डॉ. स्वप्नील शाह एवं अन्य कईं अतिथिओं तथा Powai English High School के बच्चों की हाजरी में संपन्न हुआ।

प्रारंभ में दीपप्रागट्य के साथ इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। उसके बाद छोटे-छोटे बच्चोंने अलग-अलग योग के आसन सभीके समक्ष प्रस्तुत किये।

इस योग दिन का मुख्य विषय Yoga for healthy aging रखा गया था।

उसके बाद शिबिरार्थीओंने सूर्यनमस्कार और अन्य आसनों करके पूरा माहौल योगमय बना दिया। फिर योग शिक्षकोंने सभीके पास विशिष्ट आसन करवाये।

International Yoga Day celebration at "Akshardham" Temple, Powai

उसी प्रकार दि. २१ जून को **Megarugas Hall**, चांदिवली में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.भ.डॉ. दीपकभाई परमार तथा उनके द्वारा तैयार किये गये अन्य योग शिक्षक, **Noted legal luminary and Rajya Sabha MP** पद्मश्री उज्जवल निकमजी, जलाजा

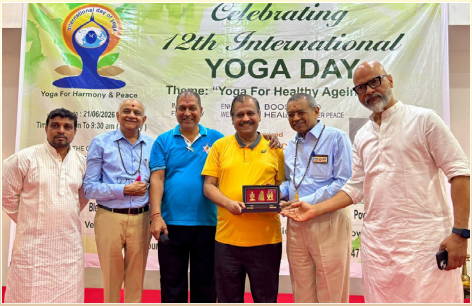

International Yoga Day celebration at Megarugas Hall, Chandivali

फाउन्डेशन के ट्रस्टी श्री. जे.पी. शेट्टीजी, डॉ. स्वप्नील शाह एवं अन्य कई अतिथिओं की हाजरी में आंतरराष्ट्रीय योग दिन का कार्यक्रम मनाया गया। सभीने योग को अपने जीवन में अपनाने के लिये संकल्प किया, जिससे अपना स्वास्थ्य, जीवन का संतुलन और आध्यात्मिक प्रगति से समाज को लाभ मिल सके।

✻ रविवार, दि. २१ जून को वोकिगन, शिकागो मंदिर का ४५वाँ पाटोत्सव प.पू. दिनकरभाई और स्थानिक हरिभक्तों की उपस्थिति में मनाया गया। साथ ही ठाकोरजी को विशिष्ट अन्नकूट भी अर्पण हुआ और बाद में दिनकरभाईने आशीष दिये। हरिभक्तोंने पाटोत्सव, अन्नकूट की आरती तथा प्रसाद का लाभ लिया।

45th Patotsav celebration at Waukegan Temple, Chicago

✻ मंगलवार, दि. २३ जून को दिल्ली से **Medifit shoes** के मालिक प.भ. सोनु सिंगजी 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। संतभाईयोंने उनका खास स्वागत किया और सत्संग भी किया।

✻ शनिवार, दि. २७ जून को हरिधाम से पू. बोसरस्वामीजी (पू. धर्मकिशोरस्वामीजी) और पू. आनंदस्वरुपस्वामीजी 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। वे पवई के सभी संतभाईयों से मिले और मंदिर के नूतनीकरण की जानकारी प्राप्त कर धुन-भजन भी किया।

With Medifit Shoes owner P.B. Sonuji

Haridham Saints at "Akshardham" Temple, Powai

✻ मंगलवार दि. २७ जून को प.पू. वशीभाई के ७४वे प्रागट्यदिन और हरिमंदिर के पाटोत्सव निमित्त पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों और कई हरिभक्तों संभाजी नगर पधारे थे।

Visit to Indobrains School at Sambhaji Nagar

Visit to Five Star School at Sambhaji Nagar

Visit to Vihang School at Sambhaji Nagar

उसी दिन सबसे पहले वे **Indobrains School** की नई **Branch** का उद्घाटन के लिये गये थे और **Shendra Five Star School** भी गये थे, वहाँ के प्रिन्सिपाल श्री. तायडे सर को स्मृति भेट देकर उनका अभिवादन किया। उन्होंने भी शाल अर्पण करके संतभाईयों का विशिष्ट स्वागत किया। उसके बाद **Vihang School** पधारे और वहाँ के श्री. विजयसरजी तथा श्रीमती. अदिति शार्दुल मेडम से और विकलांग बच्चों को मिले और उनके सर्वांगी विकास के लिये सभी शिक्षकों के समर्पण तथा नि:स्वार्थ सेवा के लिये उनकी प्रशंसा की।

उसी दिन शाम को वशीभाई का प्रागट्यदिन काकाजी महाराज उद्यान में भक्तिभाव से मनाया गया जो संक्षिप्त में हम जुलाई की पत्रिका में देखेंगे।

18th Patotsav of Hari Mandir at Sambhaji Nagar

18th Patotsav of Hari Mandir at Sambhaji Nagar

रविवार, दि. २८ जून को संभाजी नगर हरि मंदिर का १८वाँ पाटोत्सव संतभाईयों और संतबहनों की उपस्थिति में भक्तिभाव से हुआ। शिक्षापत्री के श्लोक पठन के बाद सुबह विशिष्ट महापूजा हुई और ठाकोरजी को विशिष्ट अन्नकूट अर्पण कर सभीने आरती का लाभ लिया। अंत में भरतभाई और वशीभाई के आशीर्वाद सभीको प्राप्त हुए। उसी दिन शाम को विशिष्ट भजन संध्या भी हुई और कई हरिभक्तोंने भजन प्रस्तुत कर अपना भाव प्रगट किया।

Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar

ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજના ૧૦૮મા પ્રાગટ્યપર્વે

ગુરુહરિ કાકાજી અને સ્વામિનારાયણ મંત્ર

– પ.ભ. કિશોરભાઈ ગિલ્ડર

સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ...

આંખો બંધ કરી, પલાઠી વાળી, પ્રભુની મૂર્તિ ધારી,
અંતરમાં ડૂબકી મારી કાકાજી ધૂન કરવા બેસે અને
સમગ્ર વાતાવરણ સ્વામિનારાયણના નામથી ગૂંજી ઊઠે.
વહેલી સવારની ભીનાશ હોય,ઢળતી સાંજની રતાશ હોય કે
તારલે મઢેલ રાતની નમણાશ હોય,
કાકાજીની ધૂન ચાલુ જ હોય. અહોર્નિશ એક જ તાન
સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ...
ઋતુઓનું કાળચક્ર પણ
કાકાજીના આ સુદર્શન ચક્રને ફરતું અટકાવી શકતું નથી.
શિયાળાની ગુલાબી ઠંડી હોય કે
મૂશળધાર વર્ષાના વાયરા હોય,
વસંતનાં ફૂલોની લાવણી હોય કે
શરદપૂર્ણિમાની ચાંદની હોય
સ્વામિનારાયણ મંત્રની ધૂન ચાલુ જ હોય.
દિવસ હોય કે રાત,
ભક્તોનો પ્રવાહ અવિરત ચાલુ જ હોય.
વર્ષો જૂના સત્સંગી હોય કે
આજનો આવેલ નવો આગંતુક હોય,
સંસારની માયામાં લપેટાયેલ ગૃહસ્થ હોય કે
અલખની વાટે ચઢેલ સાધકગણ હોય,
મહિલા સમાજની બહેનો હોય કે
અર્વાચીન યુગના નવતરૂણ હોય...
કાકાજીની ધૂનનો લાભ સહુ કોઈ માણતા.

સ્વામિનારાયણ મંત્રનું અમોઘ શસ્ત્ર કાકાજી છોડે
ને કાળ થરથર કાંપવા લાગે,
કર્મ બંધનોની સાંકળો એક પછી એક તૂટવા લાગે.
દુઃખરૂપ માયા પળ માત્રમાં વિંધાઈને
પરમ સુખદાઈ બની જાય.

સ્વામિનારાયણ મંત્રનો મલ્હાર કાકાજી છેડે અને
બ્રહ્માનંદની અમૃતવર્ષા અંતરને પ્રશાંત અને
પ્રફુલ્લિત બનાવી દે અંતરને અજવાળતી,
આનંદનો પરિતોષ કરાવતી અને
અસ્મિતાને સંમોહિત કરી દેતી
એ સાંજને કેમ ભૂલી શકાય?
આવો આવી એક દિવ્ય સંધ્યાનો આસ્વાદ માણીએ.
સંધ્યાનો સમય છે,
આકાશમાં સંધ્યાની લાલીમા પથરાઈ છે,
દૂરદૂરથી હરિભક્તો આવ્યા છે.
કાકાજી હમણાં જ આરામમાંથી બહાર આવી ચા–નાસ્તો
કરી સોફા પર બેઠા છે.
કાકાજી સહુનાં ખબર–અંતર પૂછે છે.
ભક્તો કાકાજીની મૂર્તિનું સુખ લઈ રહ્યા છે.
ત્યાં કાકાજી કહે છે કે 'ચાલો, આપણે ધૂન કરી લઈએ.'
ભક્તો તૈયાર થઈ જાય છે.
કાકાજી આંખો બંધ કરી, પલાઠી વાળી,
'વાણી અમૃતથી ભરી...' શ્લોક શરૂ કરે અને
ભક્તો એમાં સાથ પૂરાવે.
શ્લોક પૂરો થતાં સ્વામિનારાયણ મંત્રની ધૂન શરૂ થાય છે.
સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ...
બન્ને હોઠના ઝડપી હલનચલનમાંથી નીકળેલા ઉચ્ચારો
ધીરે–ધીરે એક લયબદ્ધ તાલમાં પરિવર્તિત થવા લાગે.
શબ્દોમાં ધીરે–ધીરે સંવાદિતતા આવવા લાગે અને
એના આરોહ અને અવરોહમાંથી
એક અલૌકિક આલાપ છેડાતો જાય.
એમાંથી નીકળતાં દિવ્ય આંદોલનો વહેતાં થતાં
વાતાવરણમાં દિવ્યતા પથરાતી જાય.
એક જ શબ્દ, એક જ સૂરનું ગૂંજન
કાનોમાં સંભળાતું જાય.
ભક્તો પણ આ દિવ્ય સૂરમાં સાથ પૂરાવે.
સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ...

આખું વાતાવરણ અલૌકિક નાદથી ભરાઈ જાય,
ભક્તો આ તાલમાં લીન થઈ જાય,
કાકાજીએ છેડેલ આ અનુપમ સરગમમાં
ભક્તો ખોવાઈ જાય,
સમય પણ આ દિવ્ય ગુંજનનો આસ્વાદ
માણવા થંભી જાય છે.
કોઈને પોતાનો હોશ નથી અને
આ વાતાવરણથી જાણે મદહોશ થતાં જાય છે અને
સમયનું પરિમાણ બદલાતું જાય છે.
સાંજ ઢળતી જાય છે અને રાતનો સુમાર જામતો જાય છે.
ત્યાં અચાનક ‘સહજાનંદસ્વામી મહારાજની જય’
બોલાય છે અને
સહુ આ સંમોહનમાં લઈ જતી પળોમાંથી બહાર આવે છે.

આવી તો કેટલીય સંધ્યાઓ માણવાનું સદ્‌ભાગ્ય અનેક
ચૈતન્યોને પ્રાપ્ત થયું છે.
એ ચૈતન્યો ખુશનસીબ છે,
જેમણે આવી દિવ્ય પળોને માણી છે,
અનુભવી છે ને ધન્ય થયાં છે.
સંસારના અનેકવિધ વ્યવહાર કરીને
થાક્યા-પાક્યા ગૃહસ્થો રાત્રે કાકાજીનાં દર્શને આવ્યા હોય
અને
કાકાજી સ્વામિનારાયણ મંત્રની ધૂન શરૂ કરે અને
પળમાત્રમાં આખાય દિવસનો થાક ઊતરી જાય.
અંતરમાં અજંપો કરતા સંસારના ઘોડાઓ શાંત બની જાય.
મન પ્રફુલ્લિત અને ચિત્ત પ્રસન્ન થઈ
પ્રભુમાં રમતું થવા માંડે.
સ્વામિનારાયણ મંત્ર ચેતનાને સ્પર્શ કરે અને
સુષુપ્ત ચેતનામાં જાગૃતિ આવી જાય.
પોતાનું ધન-ધામ-પરિવાર
એક પ્રભુને અર્થે જ વાપરવાના,
ઘરને મંદિર બનાવવાના શુભ સંકલ્પો વહેતા થાય.
અંદરોઅંદર કુટુંબભાવ અને આત્મીયતા વધારવાના,
અંબરિષ અને જનક જેવા
આદર્શ બનવાના ભાવો ઉદય થાય.
આખા દિવસ દરમ્યાન અનેકવિધ સાંસારિક
વિટંબણાઓથી ત્રસ્ત થયેલ અંતર
પ્રભુના નામના આ મધુર પિયુષથી પરિતૃપ્ત થાય છે.

શનિવારની સાંજે બહેનોની સભા હોય,
સભાની શરૂઆત કાકાજીની ધૂનથી થાય.
સ્વામિનારાયણ મંત્રનો અજપાજપ જાપ શરૂ થાય.
બહેનો એમાં સાથ પૂરાવે અને
જાણે એકસાથે અનેક કોયલોના ટહુકારથી
વાતાવરણ મઘમઘી ઊઠે.
મધૂર સૂરોના છેડાયેલ શબ્દોની એ સૂરાવલીમાં એક દિવ્ય
સંગીત વહેવા લાગે.
કાકાજીની ધૂનનાં દિવ્ય વમળો
પ્રકૃતિની ફરતે વીંટળવા લાગે અને
હઠીલી પ્રકૃતિમાં જાણે ભૂકંપનો કંપ શરૂ થાય.
પ્રકૃતિનાં મૂળિયાંની પકડ ઢીલી પડવા લાગે,
મારું-તારુંનાં વાદળો વિખરાવા લાગે.
આંખોમાં ઝામર બનેલા વેરઝેરના કરોળિયાઓ
મૃતપ્રાય થઈ, દિવ્ય દૃષ્ટિ પ્રાપ્ત થાય.
રીસામણાં-મનામણાં કરાવતા રાધાના ભાવો
પ્રભુની આરાધના કરતા થઈ જાય.
માયા અને મમત્વનું દિવ્યતામાં રૂપાંતર થાય.
સંસારનો મોહ અને આલંબન છૂટાં પડતાં જાય.
સ્ત્રી-પુરૂષના ભાવ શૂન્ય થઈ જાય.
પ્રકૃતિ ચૈતન્યરૂપ બની ચૈતન્યદૃષ્ટિ પ્રાપ્ત થાય.

તારદેવ, લોનાવાલા કે માથેરાનમાં
પ્રભુના માર્ગે ચાલતા એકાંતિક સાધકોની શિબિર હોય,
ભજન કે અનુષ્ઠાનનો પ્રોગ્રામ હોય, કાકાજીની ધૂનથી
શિબિરનો પ્રારંભ થાય.
કરોડો જન્મોથી બંધ પડેલા આત્માના કમાડને
સ્વામિનારાયણના નામનો સ્પર્શ થાય અને
ક્ષણ માત્રમાં એ કમાડ ખૂલી જાય.
આત્માને એક ખૂલ્લી અને ખુશનુમા હવાનો સ્પર્શ થાય
અને
અંતરમાં પ્રસન્નતાની લહેર વહેતી થાય.
સંકલ્પ વિકલ્પોનાં જાળાં
એ વહેતા વાયરામાં સાફ થઈ જાય.
અંતરની ગૂંચો એક પછી એક ઉકેલાતી જાય.
અનંત જન્મોથી અંધારામાં રહેલ ચૈતન્યમાં રાજમાર્ગની
કેડીઓ દૃશ્યમાન થાય.

અલખની વાટ ખૂલી જાય ને મંઝિલ તરફની દોટ શરૂ થાય.

દોષો બધા પાછળ છૂટતા જાય, ચૈતન્ય નિર્દોષ બનતો જાય, અંતરમાં નિર્દોષતા પ્રગટતી જાય.

સહુ નિર્દોષ છે, સહુમાં પ્રભુ જ રમી રહ્યા છે,
સહુ પ્રભુનાં જ સ્વરૂપો છે.

એવી નિર્દોષબુદ્ધિ સ્થિર થતી જાય.

સાધન પણ એ જ, સાધના પણ એ જ અને

સાધ્ય પણ એ જ,

માર્ગ પણ એ જ, યાત્રા પણ એ જ અને
મંઝિલ પણ એ જ, એવી અનુભૂતિ થાય.

સાધક સૂર્યમુખી બની સોળે કળાએ સૂર્યને

પોતાનામાંથી પ્રકાશવા દે એ જ સાધનાની પૂર્ણાહુતિ છે,
જીવનની ફલશ્રુતિ છે અને મોક્ષનું લક્ષ્યબિંદુ છે.

એવી તત્પરતાવાળી પરિક્ષિતની તાલાવેલી

જાગ્રત થઈ જાય.

આવા તો અગણિત ચમત્કારો

કાકાજીની ધૂનથી સાકાર થાય.

સ્વામિનારાયણ મંત્ર એ આત્મા અને
પરમાત્માની પરિભાષા છે.

આત્માને ગમતો એ સૂર છે,

તો પરમાત્માને ગમતું એ સંગીત છે.

આત્માને કેવળ પરમાત્મા જ ગમે છે અને

પરમાત્માને કેવળ વિશુદ્ધ આત્માનો જ સથવારો પ્રિય છે.

સ્વામિનારાયણ શબ્દ એ બ્રહ્મ અને
પરબ્રહ્મનો શબ્દદેહ છે.

પ્રભુની સૌરભનું એ સલોણું નામ છે અને મહેક મહેક થતી
ખુશ્બુનું એ ગાન છે.

એ મહેક જ્યારે ચારે તરફ ફેલાય છે ત્યારે એનો મઘમઘાટ,
એનાં સ્પંદનો છાનાં રહેતાં નથી.

આત્માને નવું ઓજસ, નવી તાજગી અને

પ્રદીર્ઘ શાતા બક્ષે છે.

આત્મા નિરંતર પરમાત્માનું ભજન કરે છે અને

પરમાત્મા અખંડ એ અવિભક્ત આત્માનું સ્મરણ કરે છે.

આવા શુદ્ધ બ્રહ્મમાંથી સ્વામિનારાયણ નામનો બ્રહ્મનાદ
નીકળે છે ત્યારે એ ચમત્કારોની પરંપરા સર્જે છે.

પરાવાણીમાંથી નીકળતા એ શબ્દોના પ્રવાહની

શક્તિ અને સામર્થી એટલાં જબરજસ્ત હોય છે કે

ઈન્દ્રિયો, અંતઃકરણ અને અસ્મિતા
એમાં ઓગળી જાય છે.

આવી પરાવાણીમાંથી ફક્ત એક જ વાર નીકળેલો
સ્વામિનારાયણ શબ્દ

આખા બ્રહ્માંડને હલાવી નાખવા પૂરતો છે.

ધરતીને ધ્રુજાવી, અંતરીક્ષને ભેદવાની

એ શબ્દમાં સામર્થી હોય છે.

પાપોના ડુંગરો ખોદી પુણ્યના ધોધ વરસાવવાની

એમાં ક્ષમતા હોય છે.

વાંચનારને કદાચ એમાં અતિશયોક્તિ લાગે અથવા

શબ્દોમાં અલંકારિકતા લાગે.

પરંતુ આવા અલૌકિક પુરૂષની અલૌકિક વાણીમાંથી
નીકળેલા શબ્દો માટે આવા ચમત્કારો સહજ છે.

એમની અલૌકિક વાતો આપણાં ઈન્દ્રિયો, અંતઃકરણ

સમજી શકતાં નથી.

કેવળ ચૈતન્ય જ આ વાતો અનુભવી, માણી

એની અનુભૂતિ કરી શકે છે.

આપણે બધાં પણ સ્વામિનારાયણનું ભજન કરીએ છીએ,

ધૂન કરીએ છીએ પણ

આપણા ચૈતન્યમાંથી નીકળેલા એ શબ્દો ઈન્દ્રિય,
અંતઃકરણનાં આવરણોની

અંધારી ગલીકૂચીઓમાંથી પસાર થઈ બહાર આવે

ત્યાંસુધીમાં એની અસરકારકતા, એની શક્તિ,

એની ક્ષમતા ગુમાવી બેસે છે.

આપણાં મન, બુદ્ધિ, ચિત્ત, અહમ્, અસ્મિતા
એ પ્રવાહને અવરોધી

એ શબ્દોના રણકારને બોદો કરી નાખે છે.

પરિણામે એ ફક્ત શબ્દોની શૃંખલા જ બની રહે છે અને

ચેતનામાં જોઈએ એવી જાગૃતિ લાવી શકતી નથી.

તો ચેતનાનાં રૂપાંતર કે ચમત્કારની તો વાત જ ક્યાં રહી?

વર્ષો સુધી એકધારું, અસ્ખલિત, અખંડ ભજન

કાકાજીએ કરેલ છે.

આપણે એમને માનીએ કે ન માનીએ,
સ્વીકારીએ કે ન સ્વીકારીએ પણ

એમણે આપણને પોતાના માન્યા છે,

સહર્ષ સ્વીકાર્યા છે અને

એટલે જ સહુનાં યોગક્ષેમ અને ચૈતન્યની પ્રગતિ માટે જ

એમણે વર્ષો સુધી અહર્નિશ ભજન કર્યું છે.

આજે આપણામાં બે પૈસાની બરકત દેખાતી હોય,

આપણાં ઈન્દ્રિયો, અંતઃકરણ થોડાં ઘણાં

પ્રભુ સન્મુખ ચાલતાં થયાં હોય,

આપણી પ્રકૃતિમાં નરમાશ આવી હોય આપણા
અંતરદીવડાઓ પ્રકાશવા લાગ્યા હોય તો

આપણે ચોક્કસ માનીએ કે

એ સત્પુરુષના ભજનના તપનું ફળ છે.

એમના ભજનના ઐશ્વર્યનો એ પ્રતાપ છે.

કાકાજી માટે સ્વામિનારાયણ મંત્ર એ

કેવળ સંકટ સમયે જ યાદ કરવાનું નારાયણ કવચ ન હતું
કે નહીં એ રોજ રોજ કરવાનો સ્વાધ્યાય હતો.

ન તો એ સમય પસાર કરવાનું સાત્વિક સાધન હતું કે ન
એ પ્રભુ પ્રાપ્તિ માટેની સાધના હતી.

કાકાજી માટે સ્વામિનારાયણ મંત્ર એ જીવન હતું,

એમનો શ્વાસોશ્વાસ હતો,

એમના હૃદયનો એ ધબકાર હતો, રોમરોમનો પોકાર હતો.

એમની રગેરગમાં વહેતું એ મનભાવન સંગીત હતું,
સ્વામિનારાયણ તરફની એ પ્રીતિ, એ મહોબત હતી.

એક લગાવ હતો જે એક કશીશ,

એક આસક્તિ બની ગયો હતો.

સ્વામી અને નારાયણ એ બે શબ્દોની વચ્ચે એમની સમગ્ર
દુનિયા સમાઈ હતી.

પોતાના પ્રિયતમનું એ પ્રાણપ્રિય નામ હતું.

જે હોઠ પર આવતાં જ એમના ગાલો પર
લાલી છવાઈ જતી,

આંખોમાં ચમક આવી જતી અને

અણુએ અણુમાં ખુશીની લહેર છવાઈ જતી.

સ્વામિનારાયણનું નામ કાકાજી માટે અપરિમિત સુખનો
અફાટ સાગર હતો.

આ સુખ તેઓ સહુને ખોબે ખોબે હોંશથી વહેંચતા.

વહેંચીને ખાવું એ કાકાજીની
એક આગવી લાક્ષણિકતા હતી.

સહુને એ પોતાના સુખમાં આમંત્રિત કરતા અને ભાગીદાર
બનાવવા તત્પર રહેતા.

જ્યારે કાકાજી કોઈની ધૂન સાંભળતા કે તરત જ ત્યાં
પહોંચી દર્શન આપી રાજીપોની અનુભૂતિ કરાવતા.

દૂર દેશાવરમાં કોઈ ધૂન કરે અને
સ્થૂળ દેહે ત્યાં જવું શક્ય ન હોય ત્યાં

દિવ્ય દેહે અંતરમાં પ્રગટ થઈ ભક્તોને હાશ કરાવી દેતા.

કોઈ પાંચ મિનિટ ધૂન કરવાની રુચિ દેખાડે ત્યાં કલાકોનું
અનુષ્ઠાન કરવાની સુરુચિ કાકાજી પ્રગટાવી દેતા.

આજે જ્યારે સ્થૂળ દેહે કાકાજી
આપણી વચ્ચે નથી ત્યારે પણ એમણે છેડેલી આ સૂરીલી
ધૂનના દિવ્ય તરંગો ચારે તરફ અખંડ ગૂંજી રહ્યા છે.

નાદબ્રહ્મના એ સ્વરો હવાના કણકણમાં
અવિરત ધબકી રહ્યા છે.

સહુ કોઈ એ ધબકારને અનુભવી રહ્યા છે અને
માણી રહ્યા છે.

આજે દુનિયામાં કોઈપણ ખૂણે, કોઈપણ સ્થળે

એક રુચિ, એક લગન,

એક ભાવવાળા પાંચ મુક્તો ભેગા થઈને કાકાજીની સ્મૃતિ
કરીને ધૂન કરવા બેસે ત્યાં

કાકાજી દિવ્ય દેહે એમની વચ્ચે પલાંઠી વાળીને

અચૂક બેસી જાય છે.

હોઠ ભક્તોના હાલે છે અને સૂર કાકાજીનો નીકળે છે.

શબ્દો ભક્તોના હોય પણ એની સરગમ
કાકાજીએ છેડી હોય છે.

સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ... સ્વામિનારાયણ...

ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજના ૧૦૮મા પ્રાગટ્યપર્વે એમના ચરણે એટલી જ પ્રાર્થના કરીએ કે આપે તો સ્વામિનારાયણ ધૂનની એવી રટણા લગાવી છે કે જેની ગૂંજ આજે પણ ગુણાતીત સમાજના દરેક કેન્દ્રમાં જાણે દરેકના કર્ણપટલ પર અંકિત થઈ ગઈ છે. તો એવી બળભરી સ્વામિનારાયણ મંત્રની ધૂન અમે અખંડ કરતાં રહીએ અને ધૂન કરતાં કરતાં જ દરેક કાર્યને પ્રભુચરણે મૂકી પ્રગટ ગુણાતીત સ્વરૂપોની મરજી જાણી એમનાં કૃપાપાત્ર બનીએ એવી પ્રેરણા અને બળ સહુને મળે એ પ્રાર્થના.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 6th June. (2) Bhajan Sandhya on 7th June at Zaverben Popatlal Sabhagruh-Ghatkopar. (3) Special Smruti Gift by P.B.Dr. Deepakbhai Parmar to P.P. Premswaroopswamiji in Germany on behalf of "Akshardham" Temple, Powai on 8th June. (4) Visit by P.P. Bharatbhai, P.P. Vashibhai, P. Ashwinbhai and other devotees at Delhi on 11th and 12th June. (5) Devotees from Anoopam Mission came for darshan at "Akshardham" Temple, Powai to give Invitation for AUM crematorium Inauguration at London. (6) Celebration of International Yoga Day at "Akshardham" Temple, Powai on 20th June. (7) Celebration of International Yoga Day at Megarugas Hall in the presence P.P. Bharatbhai, P.P. Vashibhai, P.B.Dr. Deepakbhai Parmar and various dignitaries on 21st June. (8) Waukegan (Chicago) Temple Patotsav celebration on 21st June. (9) Owner of Medifit Shoes P.B. Sonu Singji's visit at "Akshardham" Temple, Powai on 23rd June. (10) P. Bossswamiji and P. Aanandswaroopswamiji from Haridham at "Akshardham" Temple, Powai on 27th June. (11) Inauguration of Indobrains School and visit to Shendra Five star School and Vihang School at Sambhaji Nagar by Saint Brothers and Sisters on 27th June. (12) Sambhaji Nagar Hari Mandir's 18th Patotsav and also Bhajan Sandhya on 28th June. (13) Article for Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatya Din on 12th June.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From
YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527
'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta